ऋषिदत्ता

ताम्बावती नगरी के राजा हरिषेण को घुड़सवारी का बहुत शौक था। उसके पास एक से एक तीव्र गति से चलने वाले अश्व थे। एक बार घोड़ों के सौदागर ने एक वायु गति अश्व भेंट दिया। राजा उस पर सवार होकर घुड़सवारी करने चल दिया। राज्य की सीमा से बाहर जंगल में दूर निकल आने पर ज्यों ही अश्व को रोकने के लिए उसकी लगाम खींची–

अरे ! इसकी गति तो बढ़ती ही जा रही है। यह रुकता क्यों नहीं?

राजा पसीने से तर-बतर हो गया।

अन्त में जब घोड़ा किसी प्रकार नहीं रुका तो राजा वटवृक्ष की लटकती जटा पकड़ कर लटक गया। घोड़ा आगे निकल गया।

ओह ! बड़ी मुश्किल से प्राण बचे। सामने कोई आश्रम लगता है। वहीं चलकर विश्राम करूँ।

राजा तपोवन में आया। वहाँ एक वृद्ध ऋषि ध्यान में बैठे थे। राजा ने उन्हें प्रणाम किया–

ऋषिवर ! मैं ताम्बावती का राजा हरिषेण आपको प्रणाम करता हूँ।

आयुष्मान् भव ! राजन्, कहो इधर कैसे आना हुआ।

राजा ने उन्हें पूरी घटना बता दी फिर बोला–
आज आपके दर्शन करना मेरी नियति में लिखा था। इसलिए ही मेरी प्राण रक्षा हुई।
मेरे योग्य कोई सेवा बताइये।
राजन्, जनता की सेवा करना ही सबसे बड़ी सेवा है।
मुनिवर मैं तो सदा जनता की सेवा में तत्पर रहता हूँ।
राजा की बातों से प्रभावित होकर ऋषि ने उन्हें जड़ी दी और कहा–
राजन् ! यह विषहर जड़ी है। किसी भी विषग्रस्त को स्वच्छ जल में यह जड़ी घिसकर पिलाने से विष मुक्त हो जायेगा। विषग्रस्त रोगियों का विषहर उनकी प्राण रक्षा करना।
आपके आशीर्वाद से मैं निःस्वार्थभाव से सबकी सेवा करूँगा।
ऋषि से जड़ी लेकर कुछ समय आश्रम में विश्राम करने के बाद राजा वापस नगर लौट आया।
अगले दिन ही राजा ने राज्य में घोषणा करवा दी–
एक तपस्वी संत की कृपा से महाराज को विषहर जड़ी मिली है। जो भी विषग्रस्त रोगी हो वह आकर अपना इलाज करा लें।

दूसरे ही दिन राजमहल के बाहर विषग्रस्त रोगियों की लम्बी कतार लग गई। राजा स्वयं जड़ी को जल में घिसकर रोगियों का इलाज करने लगा।

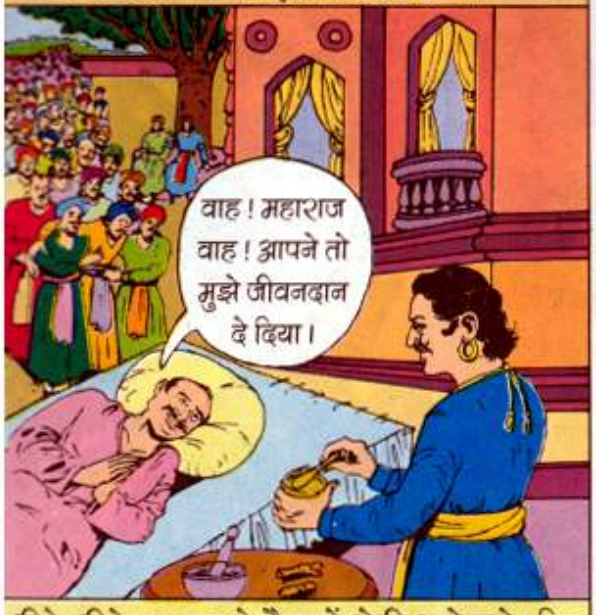

धीरे-धीरे दूर-दूर से सैकड़ों रोगी आने लगे। दिन भर राजा उनकी सेवा करता रहता।

एक दिन पास के राज्य मंगलावती की राजुमारी को काले नाग ने डस लिया। खबर मिलने पर राजा हरिषेण मंगलावती पहुँचा। उसने विषहर जड़ी का जल राजकुमारी के मुँह में डाला।

कुछ ही देर में राजकुमारी की चेतना लौट आई। सभी ने राजा हरिषेण को धन्यवाद दिया। रानी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया-

एक दिन राजा हरिषेण रानी प्रीतिमती के साथ क्रीड़ा को गया। नदी तट पर वृक्षों की छाया में राजा विश्राम कर रहा था। तभी जंगली हाथी दौड़ता हुआ उनकी ओर आया-